Theory of Deism (केवल निमित्तेश्वरवाद)

केवल निमित्तेश्वरवाद सिद्धांत का समर्थन 18 वीं सदी में टालैण्ड (John Toland), टिंडल (Mathew Tindal) और चब (Thomas Chubb) आदि दार्शनिकों की रचनाओं में मिलता है। भारतीय दर्शन में इसका कोई भी समर्थक नहीं है।

विशेषताएँ → (1). केवल निमित्तेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर असीम, निरपेक्ष तथा नित्य है। यह विश्व का निमित्त कारण है, न कि उपादान कारण। उसने विश्व की रचना शून्य से की है। इसलिए विश्व का उपादान कारण कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

(2). ईश्वर प्रत्येक रूप से पूर्ण है। उसे किसी वस्तु की कमी नहीं है। उसका इस विश्व की रचना के पीछे कोई भी निजी स्वार्थ नहीं है। उसने सृष्टि इसलिए की है कि विश्व के विभिन्न पदार्थों को अस्तित्व और सुख प्राप्त हो सके। अतः सृष्टि उद्देश्य-पूर्ण है।

(3). ईश्वर विश्वातीत है न कि उसमें व्याप्त। विश्व की रचना करके वह विश्व से उसी प्रकार पृथक हो जाता है, जिस प्रकार कोई कारीगर किसी मशीन को बनाकर उससे अलग हो जाता है। इस प्रकार ईश्वर विश्व का स्रष्टा है। "केवल निमित्तेश्वरवाद ईश्वर को विश्व से भिन्न ही नहीं मानता, बल्कि उसे विश्व से पृथक एवं बहिष्कृत मानता है"।

(4). इसके अनुसार ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण एवं सगुण है। क्योंकि ईश्वर वाद किसी निर्गुण या निराकार सत्ता का द्योतक नहीं है।

(5). ईश्वर विश्व की रचना किसी काल विशेष में करता है। सृष्टि के पूर्व संसार का अभाव रहता है। इसकी रचना होती है अतः इसका संहार भी संभव है। इसलिए विश्व अनादि एवं चिरंतन नहीं कहा जा सकता; जबकि ईश्वर अनादि एवं चिरंतन है।

(6) विश्व की सत्ता स्वतंत्र मानी गयी है। सृष्टि के समय ही ईश्वर विश्व में ऐसी शक्ति पर्याप्त रूप से भर देता है, जिस कारण उसकी अनुपस्थिति में भी विश्व प्रक्रिया चलती रहती है।

(7) - सृष्टि के समय ही ईश्वर विश्व में नियमों की स्थापना कर देता है और विश्व से पृथक हो जाता है। विश्व स्वयं इन्हीं नियमों से संचालित होता है। ईश्वर को विश्व का आदि-कारण और नियमों को गौण कारण कहा जाता है। विश्व रूपी मशीन में जब भी कोई गड़बड़ी होती है, तब ईश्वर रूपी कारीगर आकर उसे सुधार देता है। यहाँ ईश्वर की तुलना घड़ी घड़ीसाज से और विश्व की तुलना घड़ी से की गई है।

(8) - केवल निमित्तेश्वरवाद आत्माओं में इच्छा-स्वातंत्र्य की स्थापना करके आशावाद का संदेश देता है। मानव कर्म करने में स्वतंत्र है। विश्व ईश्वर की उत्तम रचना है, इसलिए इसमें कोई विरोध नहीं है।

केवल निमित्तेश्वरवाद का मूल्यांकन →

यह सिद्धांत ईश्वर एवं विश्व के बीच संबंध स्थापित करने वाले सिद्धांतों में, कुछ अर्थों में श्रेष्ठ प्रतीत होता है। इसमें निम्न गुण हैं:-

(i) → कई सिद्धांतों में ईश्वर को व्यक्तित्वरहित माना गया है। केवल-निमित्तेश्वरवाद एक ऐसे व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर में विश्वास रखता है "जो सीमाबद्ध सत्ता है तथा जो विश्व और मानव के साथ निश्चित रूप से संबद्ध है"। व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर धार्मिक भावना को संतुष्ट करता है।

(ii) → इस सिद्धांत की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें ईश्वर को विश्वातीत मानकर उसे एक सर्व-शक्तिशाली

असीम एवं महान सत्ता का रूप दिया गया है। ईश्वर विश्व से परे होकर सांसारिक प्राणियों के दुर्गणों एवं उनकी अपूर्णताओं से मुक्त रहता है। ऐसा ईश्वर धार्मिक भावना को संतुष्ट करता है, क्योंकि धार्मिक दृष्टिकोण से उपासक और उपास्य के बीच अंतर रहना आवश्यक माना गया है।

इस प्रकार से उपर्युक्त विशेषताओं के रहने पर भी इस सिद्धांत में भी कई दोष पाये जाते हैं। इसके समर्थकों की संख्या बहुत कम है। अतः केवल निमित्तेश्वरवाद दार्शनिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से असंतोषप्रद है।

अनीश्वरवाद (Atheism)

अनिश्वरवाद उस सिद्धांत को कहते हैं, जो ईश्वर में अविश्वास करता है। यह ईश्वर की सत्ता का खण्डन करता है। यह ईश्वरवाद के प्रतिकूल है। यह ईश्वर को इसलिए नहीं मानता है क्योंकि ईश्वर नाम की सत्ता उसके विवेक को संतुष्ट करने में असमर्थ है। यह ईश्वर में विश्वास न करके अन्य मूल्यों में विश्वास करता है। अनिश्वरवाद धर्म की परिधि में रखा जा सकता है क्योंकि 'धर्म' मूल्यों में विश्वास है।

अनीश्वरवाद के विभिन्न रूप :→ इसके भिन्न-भिन्न रूप हैं। आधुनिक युग में अनिश्वरवाद की व्यापकता बड़ी दुखी प्रतीत होती है, क्योंकि इस सिद्धान्त के विभिन्न अनुयायियों में आपस में विरोध दीख पड़ता है। सभी अनिश्वरवादियों में, जहाँ ईश्वरवाद के खण्डन का प्रश्न है - समरूपता है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी बातों में भिन्नता है। इस प्रकार से इसके मूलतः पाँच (5) रूप हैं —

(i). सन्देहवादी अनीश्वरवाद (Sceptical Atheism)
(ii) दृढ़वादी अनीश्वरवाद (Dogmatic Atheism)

(iii). अज्ञेयवादी अनीश्वरवाद (Agnostic Atheism)

(iv). व्यवहारवादी अनीश्वरवाद (Practical Atheism)

(v). भौतिकवादी अनीश्वरवाद (Materialistic Atheism).

भारतीय अनीश्वरवाद → भारतीय दर्शन में भी कुछ भिन्न-मत वाले अनिश्वरवादी सम्प्रदाय एवं दर्शन हैं। जैसे कि- चार्वाक दर्शन, बौद्ध दर्शन (बुद्ध), जैन दर्शन और सांख्य दर्शन। इसके अतिरिक्त मीमांसा दर्शन भी है जो कि व्यवहारवादी अनीश्वरवाद का उदाहरण है। इस प्रकार से भारतीय अनीश्वरवाद की यह प्रमुख विशेषता है कि यह अध्यात्मवाद से संगति रखता है। इस संदर्भ में चार्वाक ही एकमात्र अपवाद है। चार्वाक को छोड़कर सभी निरीश्वरवादी दर्शन परलोक की सत्ता में विश्वास करते हैं, साथ ही कर्म सिद्धांत एवं नैतिकता को प्रश्रय देते हैं। अतः भारतीय अनीश्वरवाद मूलतः अध्यात्मवाद का पोषक है।

एकेश्वरवाद (Monotheism) :→ यह सिद्धांत भी एक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है। यह ईश्वर को अनंत एवं सर्वशक्तिसम्पन्न मानता है। ईश्वर को अनेक मानने पर उसकी शक्ति कम हो जाती है। इसके उदाहरण हिन्दू, इस्लाम एवं ईसाई धर्मों में स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं। इस मत के अनुसार, परम सत्ता एक है, जिसे ईश्वर कहते हैं। इसी एक ही सत्य को विद्वान विभिन्न प्रकार से व्यक्त करते हैं। यथा- "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"। "एकोऽहं द्वितीयो नास्ति", अर्थात ईश्वर एक है दो नहीं।

इस प्रकार से एकेश्वरवाद के अनुसार, ईश्वर का अस्तित्व वास्तविक है, वह असीम, पूर्ण स्वतंत्र, निरपेक्ष, नित्य, आदि एवं अनंत है। वह विश्व का आधार, आध्यात्मिक चेतन, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ एवं सर्वोत्कृष्ट मूल्य है।